बाढ़ को समझने का प्रयास

समीक्षक : राजेन्द्र बन्धु

बाढ़ और सूखा, इन दो समस्याओं से निजात पाना खासा मुश्किल मसला है। हालांकि एक पानी की अधिकता से जन्मती है, जबकि दूसरी पानी की कमी से। पिछले वर्षों में मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात में सूखे ने तबाही मचाई तो बिहार, असम, बंगाल, उ.प्र. के सरयू पार के मैदान में बाढ़ की समस्या रही।

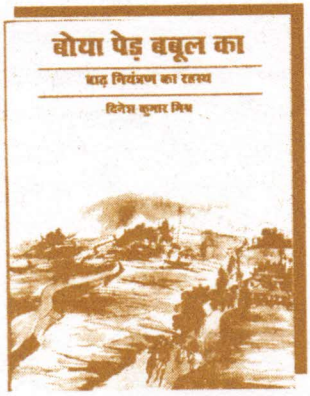

किताब : बोया पेड़ बबूल का
लेखक : दिनेश कुमार मिश्र
प्रकाशक : पृथ्वी प्रकाशन, पो. बॉक्स नं. 10551, नई दिल्ली 110067
मूल्य : 150 रुपए

उपरोक्त दोनों संकट आम जनता के लिए अत्यन्त तकलीफदेह साबित हुए हैं। राहत के नाम पर चलने वाली योजनाओं के प्रति प्रभावितों में असंतोष है क्योंकि सरकारी राहत योजनाएं समस्या का कोई प्रकृति सम्मत व स्थाई हल नहीं खोजती हैं। बल्कि तदर्थ होकर कई औपचारिकताओं से बंधी होती हैं। पिछले कुछ सालों से सूखे की समस्या से निपटने की दिशा में एक जन केन्द्रित प्रयास के रूप में जलग्रहण क्षेत्र विकास कार्यक्रम को प्रस्तुत किया जा रहा है। लेकिन इस प्रयास की उपयोगिता अध्ययन का विषय है।

बाढ़ नियंत्रण के मामले में योजनाओं व अनुसंधानों का अपेक्षाकृत अभाव पाया गया है। बाढ़ नियंत्रण की प्रचलित तकनीक व उसके प्रकृति अनुरूप हल की दिशा में जमशेदपुर के दिनेश कुमार मिश्र द्वारा किया गया अध्ययन *'बोया पेड़ बबूल'* का कई महत्वपूर्ण तथ्यों को उजागर करता है। इसमें बाढ़ नियंत्रण की तकनीकों को आलोचनात्मक दृष्टि से परखने का प्रयास किया गया है। इस किताब में तटबंध, रिंग बांध, बड़े बांध, गांव की ऊंचाई बढ़ाना, नदी को गहरा करना व चैनल सुधार, डिटेन्शन बेसिन इत्यादि जैसे बाढ़ नियंत्रण के कई अभियांत्रिकीय तरीकों का उल्लेख है। उक्त तकनीकें देश के बाढ़ प्रभावित इलाकों में उपयोग की जाती रही हैं लेकिन इसके बावजूद बाढ़ के प्रभावों में विशेष कमी देखने को नहीं मिली।

बाढ़ को समझने के लिए बाढ़ और मनुष्य के रिश्ते के इतिहास को जानना जरूरी है। क्या बाढ़ सदैव विनाशकारी रही है? क्या बाढ़ को एक प्राकृतिक सच्चाई मानकर उससे दूर रहा जाए? अथवा उसे नियंत्रित करने के प्रयास किए जाएं। उक्त सवालों को किताब के तीन अध्यायों के सवा सौ पृष्ठों में समेटा गया है। बाढ़ नियंत्रण तकनीक पर केन्द्रित अध्याय इंजीनियरों और तकनीशियनों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण लिए हुए लगते हैं। किन्तु नियंत्रण तकनीकों के बारे में तथ्यात्मक जानकारियों को इसमें शामिल करने से यह नकारात्मकता महज़ भावनात्मक नहीं लगती। बल्कि जन केन्द्रित व सतत् विकास के प्रति लेखक की प्रतिबद्धता दर्शाती है। अब तक अपनाई गई समस्त बाढ़ नियंत्रण तकनीकों को खारिज करते हुए लिखा गया है कि *प्रकृति पर काबू पाने की वैज्ञानिकों व इंजीनियरों की ललक ने जितनी समस्याओं का समाधान किया है उससे ज़्यादा उन्हें पैदा किया है। हम लोग हमेशा बाढ़ विरोधी गृह निर्माण, बाढ़ विरोधी फसलें, बाढ़ से सुरक्षा आदि शब्दों को सुनते आए हैं। आखिर क्यों विज्ञान हर चीज़ को अपना दुश्मन समझता है।*

इस मुकाम पर एक यही स्थाई समाधान रह जाता है कि बाढ़ के साथ जीवन निर्वाह किया जाए। पर मौजूदा विकास पद्धति के कारण बाढ़ की समस्या ज़्यादा विकृत हुई है। कई बड़े बांध बाढ़ का कारण बने हैं। कहीं ऐसा न हो कि एक ओर तो लोग बाढ़ के साथ जीवन जीने के प्रयास करते रहें और दूसरी ओर हमारी विकास नीति बाढ़ की तादाद और विकरालता बढ़ाती रहे। अतः जब तक प्रचलित विकास नीति को जन विकास का रूप नहीं दिया जाए तब तक बाढ़ के साथ जीवन निर्वाह कठिन है। यह किताब इस ओर इशारा जरूर करती है किन्तु इस पर व्यापक बहस नहीं करती। फिर भी बाढ़ के इतिहास को जानने, उसके नियंत्रण की प्रचलित तकनीक को परखने और बाढ़ को समझने की दिशा में यह एक उपयोगी किताब है। ***(स्रोत फीचर्स)***